सरस्वती राजेश साहू

राह-राह में कंस खड़े हैं

अत्याचारी लोग पड़े हैं
कैसे जान बचाऊं
राह -राह में कंस खड़े हैं
कैसे शान बचाऊं

घेर रखा दुर्वृत्ति ने
मूंद गई सबकी आँखे
अनाचार नित हो रहा
टूट गई सबकी पांखे
इच्छाओं में आग लगी है
कैसे अरमान जगाऊं
राह -राह में कंस खड़े हैं
कैसे शान बचाऊं ---

शकुनि की बुद्धि है सबकी
टेढ़ी चाल चले हैं
सम्पत्ति के लालच में
घर के घर जले हैं
दुर्योधन की नीयत से
कैसे दामन छुड़ाऊं
राह -राह में कंस खड़े हैं
कैसे शान बचाऊं ---

मिथ्या जग को घेर रहा
टूट रही आशायें
किंचित भी लज्जा नहीं
दुखी हुई माताये
मिथ्याभिमानी लोग पड़े हैं
कैसे मान बचाऊं
राह -राह में कंस खड़े हैं
कैसे शान बचाऊं ---

कपटी लोग पड़े दुनिया में
कुटिल विचार धारायें
मैल भरी है मंशा में
बहरुपिया रुप बनाये
खेल रहे जज़्बातों से
कैसे यकीन दिलाऊं
राह-राह में कंस खड़े हैं
कैसे शान बचाऊँ ---

जगा रहे शैतान हृदय में
रावण के शीश लगाये
हरण हुई अब की सीता
यहाँ राम न आये
मिट गई लक्ष्मण की रेखा
कैसे प्राण बचाऊं
राह -राह में कंस खड़े हैं
कैसे शान बचाऊं ---

भार बढ़ा अब धरती का
डगमग-डगमग डोल रही
लुटी जा रही नारी अब
करुण हृदय से बोल रही
दुःशासन के हाथों को
कैसे तोड़ गिराऊं
राह-राह में कंस खड़े हैं
कैसे शान बचाऊं ---

चीर रहे हैं वसन हमारे
कुकर्मी हाथों से
नोच रहे हैं तन को सारे
चूभते हैं कांटों से
भारत की मैं बेटी हूँ
अश्रु रक्त बहाऊं
राह-राह में कंस खड़े हैं
कैसे शान बचाऊँ ---

देख यहाँ सभी मौन खड़े हैं
मति गई है मारी
नहीं कोई आवाज़ उठाये
गूंगी दुनिया सारी
राम और रावण की भला
कैसे पहचान कराऊं
राह-राह में कंस खड़े हैं
कैसे शान बचाऊँ ---

भारत भूमि में कृष्ण,राम ने
नारी का सम्मान किया
लाज बचाई द्रौपदी, सिया की
रक्षा करके प्रमाण दिया
ऐसे वीर बनो रे प्राणी
नित तुझसे गोहराऊं
राह-राह में कंस खड़े हैं
उनको हार चखाऊं---

उठो ऐ नारी सशक्त बनो
अपनी आन बचाओ
रानी दुर्गा, लक्ष्मी जैसे
दुष्टों को मार भगाओ
जागो रे ऐ नारी शक्ति
नित तुझसे आस लगाऊं
राह-राह में कंस खड़े हैं
उनको हार चखाऊं ---

तुम अबला लाचार नहीं
तुम वीरांगना भारत की हो
हिम्मत और साहस भरना
तुम वीरा, सबला भारत की हो
चैतन्य रहे बुद्धि नित नारी
मर्दानी के गुण गाऊं
राह-राह में कंस खड़े हैं
उनको हार चखाऊं ---

साहस और विवेक सदा
नव शक्ति निर्माण करो
भारत की नारी शक्ति हो
दुराचारी का अंत करो
आँच न आये कभी शान पर
मैं तलवार उठाऊं
राह-राह में कंस खड़े हैं
उनको हार चखाऊं ---

रण चण्डी बनकर दिखलादो
अपने आन के खातिर
कुकर्मी का शीश चढ़ादो
अपने मान के खातिर
कुदृष्टि कोई डाल सके न
बाँहो को सबल बनाऊं
राह-राह में कंस खड़े हैं
उनको हार चखाऊं ---

अत्याचारी लोग पड़े हैं
उनको धूल चटाऊं
राह-राह में कंस खड़े हैं
उनको हार चखाऊं